www.sanskaarnews.in | SanskarNewsBharat | @SanskarNewsBharat | +91-7742431199 | SanskarNewsBh | SanskarNewsBharat | sanskaarnews@gmail.com

RNI NO. RAJBIL/2021/81903

संस्कार न्यूज

Send your news on ajmermedia@gmail.com or whatsapp 7742431199

संपादक - सरला शर्मा

राजस्थान, दिल्ली, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब, गुजरात, बिहार, उत्तरप्रदेश और उत्तराखंड में प्रसारित

DIGITAL ISSUE | SUNDAY, 30 MARCH 2025 | CHIEF EDITOR- VIJAY KUMAR SHARMA | CALL-9610012000 | PAGE-4 | PRICE-500/-RS. YEARLY

नव संवत्सर 2081 - समझें सृष्टि के नव संदेश के क्या हैं निहितार्थ ईश्वरीय संकेतों का पर्व है वर्ष प्रतिपदा

भजनलाल शर्मा/संस्कार न्यूज
मुख्यमंत्री, राजस्थान

नथ प्रति, नव लय, ताल छंद नव, नवल कंठ नव अलव मंढ़ रया नव नभ के नव विष्ण वृंद को नव पर नव स्वर दे।

महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ये पंक्तियां नए साल के आगमन पर सटीक बैठती हैं। नई सोच, नई उमंग और नया उत्साह सर्वत्र दिखाई दे रहा है। नई कोपलों से प्रकृति का रूप निखरा है, तो नये अनाज से धन–धान्य और समृद्धि की आह गांवों में घर–घर में सुनाई दे रही है। करने की परम्परा नाहवा ही नहीं है। सुष्टि, प्रकृति, धर्म और विज्ञान से जुड़े इसके गहरे निहितार्थ है। वर्ष प्रतिपदा खुद को शुद्ध करने का सांस्कृतिक पर्व है। बहापुराण में करय गया है कि सृष्टि का शुभारंभ चैत्र शुक्त की प्रतिपदा को ही हुआ था और इसी दिन से भारत में कालगणना होने लगी। परम्परा की बात करें तो उगादि, चेटीचंड, गुड़ी पड़वा आदि नामों से नए वर्ष का पर्व मनाया जाता है। वर्ष प्रतिपदा पर नए वस्त्र पहनने, घर को ध्वज, पताका, बंधनवार से सजाने, दान–पुण्य करने और नीम की डालियां तोड़कर घर लाने का सिलसिला रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो विक्रमादित्य और उनकी दिग्विजयिनी सेना ने शकों को भारत से खदेड़ कर देश में सुख शान्ति और समृद्धि की स्थापना की थी। शकों का उन्मूलन करने और विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में ही सम्राट विक्रमादित्य ने वर्ष प्रतिपदा से %विक्रम संवत% की शुरूआत की थी। यह भी मान्यता है कि धर्म की स्थापना के लिए रावण के वध के पश्चात राष्ट्र चैतन्य के सगुण स्वरूप भगवान राम का राज्याभिषेक वर्ष प्रतिपदा पर ही हुआ। भगवान राम के जन्मगोसूत्र से पहले आने माले बासंतिक नवरात्रि का प्रारम्भ इसी दिन से होता है। देखा जाए तो नए कार्य आरम्भ करने और नए संकल्प करने के लिए इससे बढ़ कर कोई दिन हो ही नहीं सकता।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघप के रूप में देश को संगठन का अचूक मंत्र देने वाले डॉ. केशवराव बलीराम हेडगेवार का भी जन्म वर्ष प्रतिपदा पर हुआ था। डॉ. हेडगेवार ने अपनी अद्भुत दृष्टि और संगठन कौशल से कितने ही देशसेवा वती कार्यकर्ता तैयार किए, जो आज भारत को परम वैभव की ओर ले जाने के स्थान को साकार करने में लगे हैं। इनके प्रयत्नों का ही सुरुल है कि पांच सौ साल बाद जन–मन के आराध्य रामालाला इस बार अयोध्या में अपने जन्मस्थान पर भव्य– दिव्य मंदिर में अपना जन्मोत्सव मनाने जा रहे है। लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के प्रयासों से संवत 2006 में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर स्वतंत्र भारत के राज्य के तौर पर राजस्थान की स्थापना की गई थी। आज जब हम विक्रमी संवत 2081 का स्वागत कर रहे हैं, तो यह शुभ दिन राजस्थान के नगोत्कर्ष के लिए प्राण–प्रण से जुट जाने का संकल्प लेने का भी अवसर है। मेरा विश्वास है कि संवत 2081 के आरम्भ में होने जा रहे इस लोकसभा चुनाव में भी देश–प्रदेश के मतदाता को यही सोच उसे राष्ट्रहित में सही निर्णय करने में दिशासूचक का कार्य करेगी।

पहला नवरात्रा:माता शैलपुत्री

या देवी सर्वभूतेषु माँ शैलपुत्रीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमो नम– ॥

शैल का अर्थ होता है पर्वत. पर्वतों के राजा हिमालय के घर में पुत्री के रूप में यह जन्मी थीं, इसीलिए इन्हें शैलपुत्री कहा जाता है. नवरात्र के इस प्रथम दिन की उपासना में साधक अपने मन को 'मूलाधार'चक्र में स्थित करते हैं, शैलपुत्री का पूजन करने से 'मूलाधार चक्र'जागृत होता है और यहीं से योग साधना आरंभ होती है जिससे अनेक प्रकार की शक्तियां प्राप्त होती हैं.

रूप– माँ शैलपुत्री दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएँ हाथ में कमल का पुष्प लिए अपने वाहन वृषभ पर विराजमान होतीं हैंमाँ शैलपुत्री को चमकदार श्वेत या हलके गुलाबी वस्त्र अर्पण करें।माँ के आगे गाये के शुद्ध घी का दीपक लगाएं। धुप अगरबत्ती भी लगाएं। माँ शैलपुत्री को सफ़ेद फूलों की माला अर्पित करें। माँ को चन्दन व् चन्दन का इत्र भी अर्पित करें।

उपासना मंत्र – वन्दे वांछितलाभाय चन्दार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्।।

भोग– माँ शैलपुत्री चन्द्रमा से सम्बन्ध रखती है। इन्हे सफ़ेद खाद्य पदार्थ जैसे खीर, रसगुल्ले, पताशे आदि का भोग लगाना चाहिए। स्वस्थ व् लम्बी आयु के लिए माँ शैलपुत्री को गाये के घी का भोग लगाएं या गायें के घी से बनी मिठाईयों का भोग लगाएं।

माँ शैलपुत्री का कवच– यह आप पढ़ भी सकते है या इसे सफ़ेद कागज़ पर लाल रंग से लिखकर अपने घर के मुख्य द्वार पर अंदर की तरफ लगा सकतें हैं।

ओमकार– मेंशिर– पातुमूलाधार निवासिनी।
हींकार– पातु ललाटे बीजरूपा महेश्वरी॥
श्रींकारपातुवदने लावाण्या महेश्वरी ।
हुंकार पातु हदयं तारिणी शक्ति स्वघृत।
फट्कार पात सर्वागे सर्व सिद्धि फलप्रदा॥

पेनल्टी कार्नर

ओंकार त्रिपाठी, दिल्ली/संस्कार

नव संवत्सर आ गया खुशियां लिए अपार।
दलहन तिलहन से भरा हर घर का भंडार,
हर घर का भंडार, चमक चेहरे पर आई,
त्योहारों की धूम देश भर में है छाई।
कहत ओम् नौमी के दिन आते हैं रघुवर
इसी खुशी में आता है यह नव संवत्सर।

शक्तिस्वरूपा माता आई करने हम सबका उद्धार।
नव रूपों में नव दुर्गा मां की महिमा है अपरम्पार।
पुत्र कुपुत्र भले ही माता नहीं कुमाता होती है,
शारदीय नवरात्र सभी मिल बोलो मैया की जयकार।

स्वचिंतन

इंदु आचार्य/संस्कार न्यूज

जय माता दी, जय जय माँ
सरगम छेड़ी धरती ने,
लाल गुलाब, कमल पुष्प से
वर्षा कर दी अम्बर ने,
स्वागत में उस कल्याणी के
गुलाल उड़ाया भक्तों ने,
प्रसन्न हो तब अपने बच्चों पे
आशीर्वाद लुटाया मैया ने।

मां दुर्गा तुम्हें आना होगा

अनामिका गुप्ता/संस्कार न्यूज

आया है नवरात्रि त्योहार
मां दुर्गा तेरी जय जयकार
भक्तों के दुख हरने को
हर युग में लेती हो अवतार
शुभ निशुंभ का वध किया
रक्तबीज का किया संघार
पापी अधर्मी फिर वही आज
फैला रहे धरती पर व्यभिचार
संकट और दुखों का आलम
त्राहि त्राहि और हाहाकार
नारी सम्मान नहीं सुरक्षित
कहीं दुष्कर्म और कहीं बलात्कार
बैठी हो क्यों चुप माता???
धरती का दुख नजर नहीं आता?
दुष्टों का करने संघार
धरती पर करने उपकार
मां दुर्गा तुम्हें आना होगा
चणडी रूप दिखाना होगा

भारतीय नववर्ष

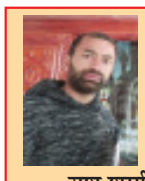

यश शर्मा/संस्कार न्यूज

मीनगत दिनकर रहे,
ऋतुराज हो चलता हुआ ।
रजनीपति का शुक्ल पक्ष,
नव वर्ष भारत का हुआ।।
धरणी हँसे नव प्राण से,
तरुवर लदे नव पर्ण से।
हर क्षेत्र शस्य श्यामल हुआ,
नव वर्ष भारत का हुआ।।
नवरात्र देवी का भजन,
दान पुण्य और हो यजन।
हर प्राण नव चेतन हुआ,
नव वर्ष भारत का हुआ।।
सम शीत घाम दोनों हुए,
सहर्ष चित सब जन हुए।
उत्तरायण देवों का हुआ,
नव वर्ष भारत का हुआ।।

आदर्शों को अपनाते हुएआगे बढ़ने का पर्व है भारतीय नववर्ष

वासुदेव देवनानी/संस्कार न्यूज
अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा

भारतीय नव वर्ष का प्रारंभ प्रतिपदा तिथि से होता है। प्रतिपदा का अर्थ ही होता है प्रथम। हिंदू कैलेंडर में चैत्र माह साल का पहला महीना है, अत: वर्ष प्रतिपदा का अर्थ हुआ चैत्र माह का पहला दिन। यही नव संवत्सर है। इसी दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी।

सनातन संस्कृति में नव संवत्सर का इसलिए भी बहुत महत्त्व है क्योंकि यह समय प्रकृति परिवर्तन से जुड़ा है। चैत्र मास की नवरात्रि का समापन रामनवमी को होगा। भगवान राम का अवतरण भी इसी माह में हुआ। धरती पर मर्यादा की स्थापना के लिए उन्होंने अवतार लिया था। वर्ष प्रतिपदा इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इसी दिन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पहले सरसंघचालक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का भी जन्म हुआ था। लाहौर में हुए अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पास किया गया था और 26 जनवरी 1930 को देश भर में तिरंगा फहराने का आह्वान भी तभी हुआ था। तब डॉ. हेडगेवार के निर्देश पर संघ की सभी शाखाओं में 30 जनवरी को तिरंगा फहराकर पूर्ण स्वराज प्राप्ति का संकल्प किया गया। उन्होंने अपने जीवन में भारत की गुलामी के कारणों का गहराई से अध्ययन किया और इसी अनुरूप स्थाई समाधान के लिए संघ का कार्य प्रारंभ किया। वर्ष प्रतिपदा इस बात का संदेश है कि हम सदा नव्य हों। सदा नूतन भेजा रहें। वर्ष प्रतिपदा समाज के जागरण का एक तरह से शंखनाद है। पत्रिक शंखनाद भी इस तरह का जिसमें हम श्रड्डह्लह्वद्गद्वड्ड परिवर्तन के लिए तैयार रहें। वर्ष प्रतिपदा जीवन में आदर्शों को अपनाते हुए आगे बढ़ने का पर्व है। यह भारतीय नव वर्ष है। भारतीय पंचांग के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा भारतीय नववर्ष की सम्भा प्रथम तिथि है। भारत के अलग टोंक अलग प्रांतों में इसका विशिष्ट महत्व को है। कर्नाटक एवं तेलुगू राज्य–को तेलंगाना और आन्ध्र प्रदेश में यह कें उगादी है, कश्मीर में यह नवरेह, है। त सिंधी संस्कृति में यही चेटीचंड है। बिगड सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन राज्य मिला स्थापित किया। इन्हीं के नाम पर विक्रमी संवत् का पहला दिन प्रारंभ यह हुआ। शक्ति और भक्ति के नौ दिन नन अर्थात् नवरात्र का पहला दिन इसी नव वर्ष से ही प्रारंभ होता है। मुख्य नग बात है, नव वर्ष में नया होना। हम 20 अतीत की समृद्ध परम्पराओं को सहजते हुए आगे बढ़ें।

हास्य के रंग गाइड के संग

राजकुमार अरोड़ा/संस्कार न्यूज

जीत और हार आपकी सोच पर निर्भर... मान लो तो हार... ठान लो तो जीत...!!!

मैनें टीचर्स डे पर टीचर को फोन किया और कहा–मैं जो कुछ भी हूँ,आपकी वजह से हूँ तो टीचर बोले–मुझे दोष मत दो,मैनें पूरी कोशिश की थी...!!!

पुरुष चाहता है उसकी जीवन साथी विश्वसुन्दरी की तरह दिखे और कान्ताबाई की तरह काम करे और हर नारी चाहती है कि उसका जीवनसाथी अम्बानी की तरह कमाये और मनमोहनसिंह की तरह चुप रहे...!!!

कोई शिक्षक हज़ारों बार अपनी कक्षा में पहुँचा था...तब जा कर आज चन्द्रयान अपनी कक्षा में पहुँचा है...!!!

पहली शिक्षक है माँ,जिसने जन्म दिया...दूसरा शिक्षक है बाप जिसने व्यवहारिक ज्ञान दिया...तीसरा शिक्षक गुरु जिसने पढ़ना सिखाया और और और चौथे शिक्षक हैं दोस्त...जिन्होंने सारी सीख पर पानी फेर दिया...!!!

पुरानी कहावत है,जब जागो तभी सवेरा अब तो नई कहावत ये हो गई...जब जागो तब ऑन लाइन...!!!

मैनें टीचर को मैसेज किया–टीचर्स डे की हार्दिक शुभकामनाएं तो वे बोले–धन्यवाद बेटा तो मैनें कहा– सर!अपनी फोटो भेज दीजिये तो वे बोले–क्यों तो मैं बोला–सर,स्टेटस पर लगाना है तो टीचर बोले–रहने दो बेटा, लोगों को पता चल गया कि तुम मेरे छात्र हो तो मेरा कोचिंग सेंटर ही बन्द हो जायेगा....!!!

शिक्षक या गुरु सिर्फ विद्यालय में नहीं...हमारे रोजमर्रा के जीवन में जो लोग मिल कर कुछ सिखा जाते हैं, वे सब शिक्षक, सबको नमन...!!!

खुशियों का कोई रास्ता नहीं...खुश रहना ही रास्ता है...!!!

आज देश में ऐसे महान शिष्य भी हैं जो अपने गुरु को ही मार्गदर्शक मन्डल में डाल कर..फिर सुध लेना ही भूल गये,उन्होंने ही राष्ट्र के नाम सन्देश में कहा है कि शिष्य हमेशा सोच समझ कर बनायें...!!!

हवा का झोंका आया,तेरी खुशबू साथ लाया...मैं समझ गई,तू आज फिर नहीं नहाया!!!

खौफ़ क्या होता है,उस इन्सान से पूछो जो अपना मोबाइल बिना लॉक किये घर भूल आया हो!!!

वो शराब पी कर बस में चढ़ा और एक साधू के पास जा कर बैठ गया,साधू उसे नशे में देख कर बोला– तुम नरक के रास्ते पर जा रहे हो तभी वो शराबी जोर से चिल्लाया–मुझे कहीं और जाना था,रोक दो,मैं गलत बस में चढ़ गया हूँ...!!!

शादी हमेशा अच्छा खाना बनाने वाली कन्या से ही करना...शादी के बाद प्यार कम हो जाता है...पर भूख नहीं!!!

चाहे कितनी भी अंग्रेजी सीख लो ...लेकिन कुत्ता अगर पीछे पड़ जाये तो हट हट करना ही पड़ता है... एक्सक्यूज़ मी...कहने से वो नहीं भागता...!!!

अपना वो है जो किसी और के लिये...आपको नजरअंदाज न करे...!!!

एक समय था जब रात बारह–एक बजे के बाद भूतों और चुडैलों का राज हुआ करता था लेकिन फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम ने ये रोज़गार भी छीन लिया...!!!

दुनिया में दो तरह के नेटवर्क ही सबसे तेज़ हैं-एक ई मेल और दूसरा फीमेल...आधे मिनट में पूरी बात इधर से उधर...!!!

तुम्हारा रिजल्ट बहुत खराब आया है,कल पापा को साथ ले कर आना वरना...???टीचर के ये कहने पर छात्र–वरना क्या?तो टीचर– वरना रिजल्ट फेसबुक पर अपलोड करके उससे तुम्हारे पापा को टैग कर दूँगी तो छात्र बोला–मैं भी मम्मी को बताऊंगा, मेरी मैडम पापा की फ्रेंडलिस्ट में है...!!!

ऐ!जिन्दगी इतनी तकलीफ़ मत दिया कर...जरूरी नहीं कि हर इन्सान की जिन्दगी में चुप कराने वाले हों!!!

स्वछंद

कुछ तो तू भी समझ है ज़िंदगी,
अब शराफत का वक्त नहीं रहा।
बद्तमीजों से भरी महफिल में,
शान किसे है दिखा रहा।
सभी की नाक की ओट में है भगवान जहां!
वहां किसी तू दर्शन करवा रहा।।

-ज्ञानेश्वरी व्यास स्मृति/संस्कार न्यूज

चैत्र नवरात्रि की महिमा

डॉ आरती वाजपेयी/संस्कार न्यूज

नवरात्रि वर्ष के महत्वपूर्ण चार पवित्र माह में आती है। यह चार माह है– चैत्र, आषाढ़, अश्विन, और पौष। चैत्र माह में चैत्र नवरात्रि जिसे बड़ी नवरात्रि या बसंत नवरात्रि भी कहते हैं। आषाढ़ और पौष माह की नवरात्रि को गुप्त नवरात्रि कहते हैं। अश्विन माह की नवरात्रि को शारदीय नवरात्रि कहते हैं।

नवरात्र शब्द से %नव अहोरात्र%अर्थात विशेष रात्रियों का बोध होता है। इन रात्रियों में प्रकृति के बहुत सारे अवरोध खत्म हो जाते हैं । दिन की अपेक्षा यदि रात्रि में आवाज दी जाए तो वह बहुत दूर तक जाती है।

इसीलिये इन रात्रियों में सिद्धि और साधना की जाती है।इन रात्रियों में किए गए शुभ संकल्प सिद्ध होते हैं।

देवियों में त्रिदेवी, नवदुर्गा ,दशमहाविद्या, और चौसठ योगिनियों का समूह है। आदि शक्ति अम्बिका सर्वोच्च हैं और उन्ही के कई रूप हैं ।सती ,पार्वती ,उमा और काली माता भगवान शंकर की पत्नियां हैं। अम्बिका ने ही दुर्गमासुर का वध किया था इसीलिये उन्हें दुर्गा माता कहा जाता है।

नवरात्रि में नौ देवियों- शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघण्टा, कुष्मांडा, स्कंदमाता ,कात्यायनी, कालरात्रि ,महागौरी, सिद्धिदात्री का पूजन विधि विधान से किया जाता है। कहते हैं की कात्यायनी ने ही महिषासुर का वध किया था इसलिए उन्हें महिषासुरमर्दिनी भी कहते हैं ।दुर्गा सप्तशती के अनुसार अन्य रूप भी है :– ब्राह्मणी,माहेश्वरी, कौमारी,वैष्णवी,वाराही नरसिंही, एन्द्री,शिवदूती,भीमा देवी,भ्रामरी, शांकम्भरी, आदिशक्ति और रक्तदंतिका।

नवदुर्गा में दश महाविद्याओं की भी पूजा होती है इनके नाम है –काली, तारा, छिन्नमस्ता, षोडशी, भुवनेश्वरी, त्रिपुरभैरवी, धूमावती, बगुलामुखी, मातंगी और कमला।

नौ देवियों को नौ प्रकारों के भोग भी अर्पित किए जाते हैं जैसे –शैलपुत्री कुट्टू और हरड़,ब्रह्मचारिणी दूध –दही और ब्राम्ही, चंद्रघण्टा चौलाई और चंदुसूर,कूष्मांडा पेठा, स्कंदमाता श्यामक चावल और अलसी, कात्यायनी हरी तरकारी और मोहिया,कालरात्रि कालीमिर्च ,तुलसी और नागदौन ,महागौरी को साबूदाना और तुलसी, सिद्धिदात्री आंवला और शतावरी।

प्रत्येक देवी को उनके वाहन, भुजा और अस्त्र- शस्त्र से पहचाना जाता है ।जैसे अष्टभुजा धारी देवी दुर्गा और कात्यायनी सिंह पर सवार हैं तो माता पार्वती,चंद्रघंटा और कुष्मांडा शेर पर विराजमान है। शैलपुत्री और महागौरी वृषभ पर, कालरात्रि गधे पर और सिद्धिदात्री कमल पर विराजमान हैं। इसी तरह सभी देवियों की अलग-अलग सवारी हैं।

इन नौ दिनों में मद्यपान मांसभक्षण और स्त्रिसंग शयन वर्जित माना गया है ।जो व्यक्ति ऐसा अपराध करता है निश्चय ही वह माता के प्रति असम्मान प्रकट करता है। उपवास में रहकर इन नौ दिनों में कि गई हर तरह की साधनाएं और मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

भारतीय नव संवत्सर: विक्रमी संवत

डॉ. ओंकार त्रिपाठी/संस्कार न्यूज

चैत्रमासी जगत ब्रह्मा ससर्ज प्रथमे अहनि।
शुक्लपक्षे समग्रेतु तदा सूर्योदये सति।।

ब्रह्म पुराण की मान्यता है कि ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना चैत्र मास शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन प्रथम सूर्योदय के होने पर की। इसी दिन से पंचांग में काल गणना की जाती है। इसी दिन से विक्रमी संवत की भी शुरुआत होती है। आज भले ही ग्रेगोरियन कैलेंडर अधिक चर्चित हो गया है, लेकिन इससे कहीं बहुत पहले अस्तित्व में विक्रमी संवत आया था। संवत यानी समय गणना का भारतीय मापदंड। विक्रमी संवत का प्रारंभ सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करने के उपलक्ष में 57 ईसा पूर्व किया था, इसलिए इसे विक्रमी संवत भी कहते हैं। विक्रमी संवत की शुरुआत मध्य प्रदेश के उज्जैन से हुई, जहां से होकर कर्क रेखा गुजरती है। आज भी सारे धार्मिक और मांगलिक अनुष्ठान में तिथि और काल की गणना का आधार यही विक्रमी संवत है। भारतीय पंचांग निर्धारण का आधार भी यही विक्रमी संवत है। विक्रमी संवत का संबंध विश्व की प्रकृति, खगोल विज्ञान, ब्रह्मांड के ग्रहों और नक्षत्रों से है और यह सर्वथा वैज्ञानिक है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना को भी दर्शाती है। ब्रह्मांड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। इस भारतीय नव संवत्सर का वर्णन यजुर्वेद के 27वें और 30वें अध्याय के मंत्र क्रमांक 45 व 15 में दिया गया है। सौर मंडल के ग्रहों और नक्षत्र की चाल, उनकी निरंतर बदलती स्थिति पर हमारे दिन, महीने, साल और उनके सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं। आजादी के बाद नवंबर 1952

में वैज्ञानिक और औद्योगिक परिषद के द्वारा पंचांग सुधार समिति की स्थापना की गई थी। समिति ने 1955 में सौंपी अपनी रिपोर्ट में विक्रमी संवत को स्वीकार करने की सिफारिश की थी। लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री ने ग्रेगोरियन कैलेंडर को ही राष्ट्रीय कैलेंडर के रूप में स्वीकार किया। यह समय शीतकाल की शीतलता और ग्रीष्मकाल की आतपता का संधिकाल होता है। वसंत के आगमन के साथ ही पतझड़ की कटु स्मृति को भुलाकर नूतन किसलय से युक्त पाटप वृंद प्रकृति का अद्भुत श्रृंगार करते दिखाई देते हैं। पशु पक्षी हो या फिर स्थावर-जंगम, सारे प्राणी नव आशा, नव उत्साह के साथ अपने-अपने कार्यों में लगे दिखाई देते हैं। फूल पराग से भर जाते हैं। अलि कली से प्यार का इज़हार करते हैं। धरती धानी चुनर ओढ़े दुल्हन-सी सजी दिखती है। फसल पकने लगती है। कृषक का चेहरा खिल उठता है। वातावरण अत्र-तत्र-सर्वत्र नूतन उमंग से भर जाता है। नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं। ऐसे वासंती समय में वार्षिक काल की गणना का श्रीगणेश करते हुए नव संवत्सर का स्वागत सहज ही प्रतीत होता है।

यह पर्व संपूर्ण भारत में विविध नामों से मनाया जाता है। आंध्र प्रदेश में इसे उगादि, महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा, पंजाब में बैसाखी, तमिल में पंथडू, असम में बिहू, बंगाल में पोहलाबोईशाख, गुजराती में इसे वेस्तु पर्व, मलयालम में विशु तो कश्मीर में नवरेह के नाम से जाना जाता है। नेपाल में सरकारी संवत के रूप में विक्रमी संवत ही चल रहा है। भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम नवरात्र से शुरू होता है। घर-घर में माता रानी की पूजा की जाती है, जो वातावरण को शुद्ध और सात्विक बना देती है। इसी दिन वरुणावतार संत झूलेलाल की जन्म जयंती भी मनाई जाती है। राक्षसों का संहार कर अयोध्या लौटे भगवान राम और द्वापर युग में सम्राट युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। शक्ति और भक्ति की स्थापना का पहला दिन आज से ही शुरू होता है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की थी। सिख परंपरा के द्वितीय गुरु अंगददेव जी का जन्म भी इसी दिन हुआ था। इसी माह में किसानों की फसल पकती है, कटती है और किसान का घर धन-धान्य से भर जाता है। चैत्र मास में विद्यालयों के परिणाम आते हैं और नव शिक्षण सत्र का आरंभ होता है। भारत सरकार और उसके आर्थिक संस्थानों का नया वित्तीय वर्ष भी 1 अप्रैल से शुरू होता है। नया पंचांग भी इसी महीने आता है, जिससे प्रत्येक भारतीय पर्व, विवाह और अन्य मुहूर्त की गणना की जाती है। मान्यता तो यह भी है कि सम्राट विक्रमादित्य के शासनकाल में ही प्रथम कैलेंडर अर्थात पंचांग का आविष्कार गणना और विकास हुआ था। भारतीय पंचांग के अनुसार ही 12 महीनों का एक वर्ष और 7 दिनों के सप्ताह का प्रचलन शुरू हुआ था। कहा जाता है कि यूनानियों ने ही भारतीय पंचांग को विश्व के भिन्न-भिन्न देश में प्रचारित प्रसारित किया था। पंचांग की उत्पत्ति वैदिक काल में ही हो चुकी थी। इसी समय से ही पंचांग सूर्य एवं नक्षत्र की गति सिद्धांत पर आधारित है। वैदिक काल के पश्चात आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कर आदि जैसे खगोल शास्त्रियों ने पंचांग को विकसित कर उसमें चंद्र की कलाओं का भी निर्धारण किया है। वेदों और अन्य ग्रंथों में सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, नक्षत्र सभी की स्थिति, दूरी और गति का वर्णन पाया जाता है। स्थिति, दूरी और गति के मान से ही पृथ्वी पर होने वाले दिन-रात और अन्य संधिकाल को विभाजित कर एक पूर्ण सटीक पंचांग बनाया गया है। संपूर्ण भारतीय प्रायद्वीप जन्म से लेकर जीवन अवसान तक हर शुभ-अशुभ कार्य में पंचांग का अनुसरण करता है। अत: भारतीय जीवन दर्शन से जुड़ा हुआ संवत्सर ही हम भारतीयों का वास्तविक नववर्ष है। इसे हमें बड़े उत्साह और गर्व के साथ एक पर्व के रूप में धूमधाम से मनाना चाहिए। वैसे भी रात के समय दिन नहीं बदलता, इसलिए सनातन नववर्ष की शुरुआत 1 जनवरी से नहीं होती।

हिन्दू नव वर्ष

भरत लाल गौतम/संस्कार न्यूज

चैत्र प्रतिपदा वार, लाया खुशियां अपार,
किया प्रकृति श्रृंगार, हिन्दू नव वर्ष में,

पेड़ पौधे पल्लवित, वन बाग पुष्पित,
मंद सुगंध पवन, बह रहे हर्ष में,

पशु पक्षी करे गान, पिक भौंरा छेड़े तान,
खुशी मना रहे देखो, आज नये वर्ष में,

नवरात्रि गुणगान, राम और हनुमान,
पूजा करो सभी जन, देश के उत्कर्ष में,

नमन राजस्थान

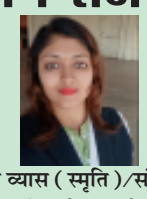

ज्ञानेश्वरी व्यास (स्मृति)/संस्कार न्यूज

राजस्थान की कर्म भूमि को,
करते हैं हम आज नमन।
वहां के वीरों को ना भूलें,
वे सदा रहेंगे हृदय में अमर।
राजस्थान शब्द खुद बतलाता,
अपनी गाथाओं का कथन।
यह है राजाओं का स्थान,
वे हैं राजपूताना अमर गढ़।
क्षत्राणी भी यहीं से जन्मी,
वीरांगना को शत-शत नमन।
हर एक छटा है यहां की निराली,
पहनावे के चर्चे दुनियाभर में मगन।

म्हारो प्यारो राजस्थान

मरुधर देस

ओ म्हारो प्यारो मरुधर देश
रंग रंगीलो अलबेलो न्यारों मरुधर देस
घणी प्यारी बोली अठै री अर प्यारो भेस
ऊंचै ऊंचै धोरां हालों अर चबंल रो देस
ओ म्हारो प्यारो मरुधर देस....
जयपुर तो सगलै नगरां मै पटराणी कुहावै
कोटा बूंदी नै जग जाणै चित्तौड़ मीरा रो देस
उदयपुर री पद्मिनी नै कुण नी जाणै
हाड़ी राणी इरै खातर दे दियो सीस
ओ म्हारो प्यारो मरुधर देस...
बीकाणे रै रसगुल्ला नै सारो जग जाणै
जोधपुरी पोशाक तो सब रै मन भावै
जैसलमेर री मूमल नै कुण नी जाणै
सगलां नगर राजस्थान री शान बढ़ावै
ओ म्हारो प्यारो मरुधर देस...
ई रा महल गढ़ विलायता नै खूब लुभावै
घणै चाव सूं परदेसी घुमबां नै अठै आवै
कैर सांगरी बाजरे री रोटी घणै चाव सूं खावै
काकड़ी बोर मतीरा मीठा रस सूं लबरेज
ओ म्हारो प्यारो मरुधर देस....
म्हानै घणो गरब गुमान म्हारी ई धरा माथै
म्है तो तनड़ो मनड़ो वारां ई री शान माथै
इरी जस गाथा लेखनी सूं कैयी नी जावै
आ है वीरां री धरा अर भगतां रो देस
ओ म्हारो प्यारो मरुधर देस....

नौ दिवस ये पावन

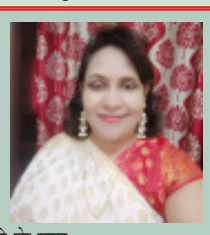

सीमा शुक्ला चाँद/संस्कार न्यूज

बैठकी का दिवस लाता है माँ को जगत के हर बच्चे के पास
नौ दिवस ये पावन भरते हर एक कण मे नव जीवन का उल्लास
भक्ति भावना हवन मंत्रोचारण करते नकारात्मक भावो का नाश
दया परोपकार सहयोग संयम सुरक्षा सेवा सीखा जाता ये उपवास
बन जाते हैं कर स्वंय को समर्पण हम सभी माँ के सच्चे दास
आज है नवमी की पावन बेला दे रही जो हर मन को कितनी आस
इन नौ दिवस में मदिरा और वयस्नो को त्याग कर व्यक्ति रचे इतिहास
जात पात की भूल के रेखा पूजी जाती हर उम्र की कन्या घर घर खास
ये नौ दिवस जो व्यवहार हम करते है चाह वर्ष भरा बना रहे वही व्यवहार काश
होगी शांति सम्पन्नता थरा पर मुस्कुराऐगा सारा देवयुक्त आकाश
है यही शुभेच्छा माँ हर घर में सम्पन्नता स्वास्थ्य सेवा सुरक्षा शांति बन करे सदा निवास
बन जाए हर मन में मंदिर और माँ का हर जीव निर्जीव बन जाए आवास
हर गलत कदम से पहले माँ के साथ होने का होगा जब आभाष
चाहकर भी हम सब राह न भटकेंगें जब माँ भी लेंगे हम सभी में साँस

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

मीनाक्षी राजपुरोहित 'मीनू'/संस्कार न्यूज

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से जो आगाज हुआ,,
नूतन वर्ष का भूल रही जो नव पीढ़ियां ,,
उनको याद दिला देना, नवसृजन की बारी है।
नवरात्रि की तैयारी हैं ,धूमधाम से करो नए ,,
साल की तैयारी हैं,,
मां अंबे का आगमन दुष्टों का संघार हैं,,
नया साल है नया मौका है ,,
अपने जीवन में कुछ कर दिखलाओ ,,,
पुराने साल का चले जाना,, नए सृजन का आ जाना,,
यह नया संदेश तुम सबको दे देना,,,।
मानवता का मान बढ़ाएं ऐसा इतिहास,,,
तुम रच देना ,,सारी दुनिया चल रही 2023 में,,,
हम स्वागत करते हैं विक्रम संवत 2081का ,,,
सारी दुनिया से वर्ष 58 हम आगे चलते हैं,,
गेहूं की बाली नव कोंपल की भी फूट रही,,
चहचाहती चिड़ियों के कलरव भी गूंज रहे,,
कहती है मीनू ऋषि-मुनियों के इस स्वर्णिम,,
अवसर को लेकर हम आगे बढ़ते हैं ,,,
फिर से एक नया इतिहास रचते हैं,,,
ऋषि-मुनियों की तपोभूमि है यहां सुखद ,,,
भविष्य की कल्पना हम करते हैं ,,,
अखंड ज्योति का ज्ञान जलाकर सारी,,,,
दुनिया रोशन कर देना,,हर हिंदुस्तानी के मन में,,
राष्ट्रप्रेम की अलख जगा कर,,, सुखद राम,,
राज्य की नींव लगा देना,,,
जय श्री राम का डंका बजा देना ।।।

Positivity is key

Sidhartha Mishra/Sanskar News

Positivity is a state of mind that is characterized by an optimistic and hopeful attitude towards life. It is the ability to find joy, happiness, and optimism even in the face of difficult situations. Positivity can be a powerful force that can help individuals overcome obstacles, achieve success, and lead a fulfilling life.Being positive has numerous benefits for both physical and mental health. Positive thinking has been linked to lower levels of stress, decreased risk of depression and anxiety, improved immune system function, and increased overall well-being. Studies have shown that people who have a positive outlook on life tend to live longer and have better health outcomes than those who do not.

One of the keys to being positive is to focus on the good in your life. Instead of dwelling on negative experiences or setbacks, try to focus on the positive aspects of your life. This can be as simple as taking a moment each day to think about the things you are grateful for. It can also involve practicing positive affirmations or visualization techniques to help you stay focused on your goals and maintain a positive attitude. Another important aspect of positivity is maintaining a growth mindset. This means that you approach challenges as opportunities to learn and grow, rather than as obstacles to overcome. When you have a growth mindset, you are more likely to view setbacks as temporary and to believe that you have the ability to overcome them. Positivity can also be contagious. When you have a positive attitude, you are more likely to inspire and motivate others around you. This can lead to a ripple effect of positivity, where the people around you become more positive and optimistic as well.

There are many ways to cultivate positivity in your life. Some of the most effective strategies include: Practicing gratitude: Take time each day to think about the things you are grateful for.

Focusing on solutions, not problems: Instead of dwelling on problems, focus on finding solutions and taking action.

Surrounding yourself with positive people: Spend time with people who lift you up and support your goals. Finding the silver lining: Try to find the positive aspects of any situation, even if it seems negative at first.

Taking care of your physical health: Exercise, eat well, and get enough sleep to help maintain a positive outlook.

In conclusion, positivity is a powerful force that can help you overcome challenges, achieve success, and lead a fulfilling life. By focusing on the good in your life, maintaining a growth mindset, and cultivating positivity in your relationships and surroundings, you can experience the many benefits of a positive attitude.

नव संवत्सर 2082 का नाम सिद्धार्थी

विजय कुमार शर्मा/संस्कार न्यूज

नव संवत्सर 2082, जिसे विक्रम संवत 2082 के नाम से भी जाना जाता है, हिंदू कैलेंडर के अनुसार एक नया वर्ष है जो चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से शुरू होता है। यह हिंदू नववर्ष का प्रारंभ होता है और भारतीय संस्कृति में इसका धार्मिक, सांस्कृतिक और ज्योतिषीय महत्व है।

वर्ष 2025 में यह नव संवत्सर 30 मार्च, रविवार से शुरू होगा। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं-

1. प्रारंभ और तिथि

- दिनांक- नव संवत्सर 2082 की शुरुआत 30 मार्च 2025 को होगी। वैदिक पंचांग के अनुसार, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि 29 मार्च 2025 को शाम 6-57 बजे से शुरू होकर 30 मार्च 2025 को दोपहर 3-19 बजे तक रहेगी। उदया तिथि के आधार पर, यह 30 मार्च को मनाया जाएगा।

- दिन- यह रविवार को शुरू होगा, जो सूर्य देव का दिन माना जाता है।

- नक्षत्र और योग- यह संवत्सर रेवती नक्षत्र और इंद्र योग में शुरू होगा। इस दौरान सूर्य और चंद्रमा दोनों मीन राशि में रहेंगे।

2. ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व

- विक्रम संवत का इतिहास- विक्रम संवत की शुरुआत सम्राट विक्रमादित्य ने 57 ईसा पूर्व में की थी। यह चंद्र-सौर आधारित कैलेंडर है, जिसमें चंद्रमा की गति से महीने और सूर्य की गति से वर्ष की गणना होती है। यह ग्रेगोरियन कैलेंडर से 57 वर्ष आगे चलता है (2082 - 57 = 2025)।

- धार्मिक मान्यता- मान्यता है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना शुरू की थी। इसके अलावा, इस दिन भगवान राम का राज्याभिषेक, युधिष्ठिर का राज्यारोहण, और देवी शक्ति की पूजा का प्रारंभ भी हुआ था।

- चैत्र नवरात्रि- इस दिन से चैत्र नवरात्रि शुरू होती है, जो मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा का पर्व है। यह हिंदू नववर्ष का पहला त्योहार भी है।

3. संवत्सर का नाम और ग्रहों का मंत्रिमंडल

- नाम- विक्रम संवत में 60 संवत्सरों का चक्र होता है, और प्रत्येक वर्ष का एक विशिष्ट नाम होता है। नव संवत्सर 2082 का नाम सिद्धार्थी बताया जा रहा है। यह नाम वर्ष के प्रभाव और फल को दर्शाता है।

- राजा और मंत्री-

- राजा- चूंकि यह संवत्सर रविवार से शुरू हो रहा है, इसलिए इस वर्ष का राजा सूर्य होगा। सूर्य को ग्रहों का अधिपति माना जाता है।

- मंत्री- अधिकांश ज्योतिषियों के अनुसार, इस वर्ष का मंत्री भी सूर्य ही होगा, क्योंकि वैशाख मास का पहला दिन (13 अप्रैल 2025, रविवार) भी सूर्य के प्रभाव में होगा। हालांकि, कुछ विद्वान चंद्रमा को मंत्री मानते हैं।

- अन्य पद- कोषाध्यक्ष मंगल और अनाज मंत्रालय का स्वामी चंद्रमा हो सकता है।

- ज्योतिषीय महत्व- संवत्सर के ग्रहों के मंत्रिमंडल के आधार पर पूरे वर्ष के शुभ-अशुभ फलों का निर्धारण होता है।

4. सूर्य के प्रभाव

सूर्य के राजा और मंत्री होने के कारण वर्ष 2082 पर इसका विशेष प्रभाव रहेगा-

- प्रकृति पर प्रभाव- गर्मी का प्रकोप बढ़ सकता है। ज्योतिष के अनुसार, सूर्य के प्रभाव से तापमान में वृद्धि, सूखा, और जंगलों में आग की घटनाएं बढ़ सकती हैं।

- राजनीति- सूर्य शक्ति और अहंकार का प्रतीक है। इस कारण राजनीति में उथल-पुथल, शासकों के बीच टकराव, और केंद्र-राज्य सरकारों में मतभेद संभव हैं।

- अर्थव्यवस्था- दूध और बाजरा जैसे उत्पादों के दाम बढ़ सकते हैं। सूर्य के प्रभाव से अनुशासन बढ़ेगा, लेकिन अहंकार के कारण कुछ क्षेत्रों में नुकसान भी हो सकता है।

- स्वास्थ्य- सूर्य के प्रभाव से नेत्र रोग, गर्मी से संबंधित बीमारियां, और तनाव बढ़ सकता है।

5. सांस्कृतिक उत्सव

- भारत में नव संवत्सर को विभिन्न नामों से मनाया जाता है-

- गुड़ी पड़वा (महाराष्ट्र),

- उगादी (आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक),

- नवरेह (कश्मीर),

- चेती चंड (सिंध),

- संवत्सर पड़वो (गोवा और केरल का कोंकणी समुदाय)।

- लोग इस दिन घरों को सजाते हैं, स्वास्तिक और रंगोली बनाते हैं, और भगवा ध्वज फहराते हैं। यह सात्विक और धार्मिक उत्साह का अवसर होता है।

हिंदू नव संवत्सर

मधु वशिष्ठ/संस्कार न्यूज

मैया देखो आज प्रत्येक जन मुस्कुराया है।
चैत्र माह में जब नव वर्ष आया है।
आदि शक्ति मां दुर्गा के हर रूप से
प्रत्येक जन ने नवरात्रों में आशीर्वाद पाया? है।
मैया यह नव वर्ष बहुत निराला आया है।
बरसों से तंबू में रहते थे श्री राम जी,
इस वर्ष बना उनका भव्य भवन निराला है।
चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को हम सब भगवान श्री राम जी का जन्मदिन मनाएंगे।
अयोध्या भी जाएंगे रामलला से मिलकर भी आएंगे।
बजाएंगे बधाइयां सब मिलकर मिठाईयां खाएंगे।
मैया नववर्ष यह खुशियों वाला आया है। राम लला को देख मन मुस्कुराया है।
अंग्रेजी नव वर्ष तो चला गया है अब इस हिंदू नव संवत्सर ने सबके मन में उत्साह जगाया है
नई फसलें उगी,आओ गणपति का पूजन करें।
कलश स्थापित करें
चैत्र माह के नवरात्रि में मैया का भी पूजन समय आया है।

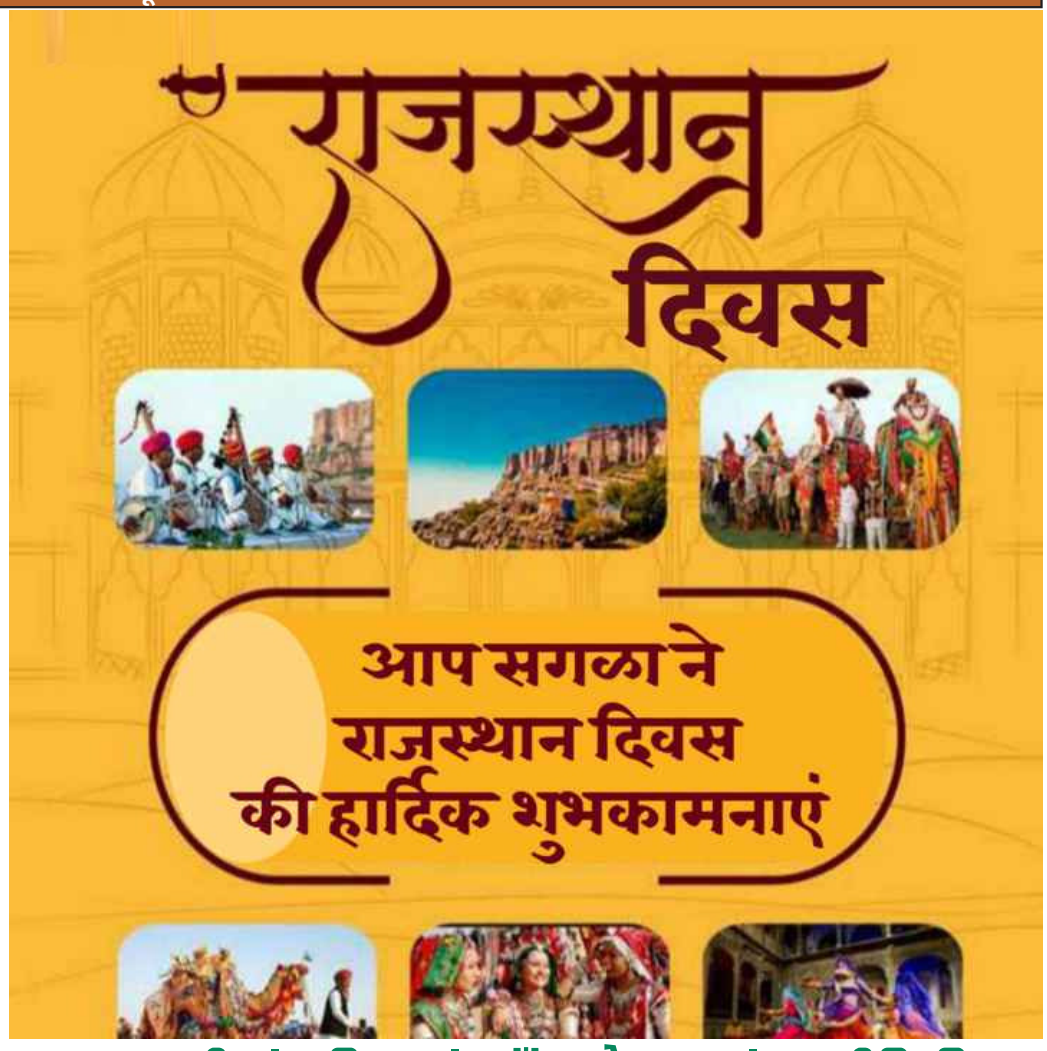

राजस्थान की संस्कृति - परंपराएँ, त्यौहार, व्यंजन, रीति-रिवाज

राजस्थान की संस्कृति समृद्ध और विविध है, राज्य के लोगों में इतिहास और परंपरा की गहरी समझ है। राजाओं की भूमि एक जीवंत और रंगीन राज्य है जहां परंपरा और संस्कृति साथ-साथ चलती हैं।

संस्कृति परंपराओं, रीति-रिवाजों और विश्वासों की एक समृद्ध टेपेस्ट्री है। रंग-बिरंगे त्योहारों से लेकर स्वादिष्ट भोजन तक, देखने के लिए बहुत कुछ है।

लेकिन वास्तव में राजस्थान की संस्कृति क्या है? यहां, आइए विवरण में उतरें-

लोक संगीत और नृत्य-लोक संगीत पर थिरकाने के लिए एक आदर्श स्थान है। यह संगीत राजस्थानी संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों का मिश्रण है, और यह निश्चित रूप से आपको झूमने पर मजबूर कर देगा।

संगीत ज्यादातर लोक परंपराओं पर आधारित है और जीवंत और जीवंत है, अक्सर ढोलक, शहनाई और सारंगी जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों के साथ। सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य घूमर नृत्य हैं, जो महिलाएं करती हैं, और कालबेलिया नृत्य, जो कालबेलिया समुदाय द्वारा किया जाता है।

पारंपरिक कला और शिल्प-राजस्थानी संस्कृति अपनी पारंपरिक कला और शिल्प के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है। राजस्थान की सबसे लोकप्रिय कला और शिल्प में ब्लॉक प्रिंटिंग, टाई और डाई, संगमरमर जड़ाई का काम और लघु चित्रकला शामिल हैं।

प्रसिद्ध ऊँट उत्सव-ऊँट उत्सव भारत के सबसे प्रसिद्ध त्योहारों में से एक है और राजस्थानी संस्कृति का अभिन्न अंग है। हर साल, ऊंट मालिक और व्यापारी अन्य ऊंट मालिकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए राज्य भर से आते हैं।

यह त्यौहार ऊँट दौड़, सौंदर्य प्रतियोगिताओं और अन्य उत्सवों का भी समय है। यह प्रतिवर्ष पुष्कर, बीकानेर, जैसलमेर और अन्य क्षेत्रों में आयोजित किया जाता है और ऊँट उत्सव मनाया जाता है। ऊँट दौड़ से लेकर सौंदर्य प्रतियोगिता तक, इस अनूठे आयोजन में हर किसी के लिए कुछ न कुछ है।

स्थापत्य विरासत-स्थापत्य विरासत शायद राजस्थान की संस्कृति का सबसे प्रतिष्ठित तत्व है। यह राज्य भारत के कुछ सबसे प्रभावशाली किलों और महलों का घर है, जिन्हें राजपूत शासकों ने बनवाया था, जिन्होंने कभी इस क्षेत्र पर शासन किया था।

इन इमारतों पर जटिल डिजाइन और सुंदर नक्काशी राजस्थानी कारीगरों के कौशल की गवाही देती है। राजस्थान में प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प विरासतों में से उम्मेद भवन महल, दिलवाड़ा मंदिर, नाकोडा जैन मंदिर आदि हैं।

व्यंजन-राजस्थान अपने तीखे व्यंजनों के लिए जाना जाता है, जो उन लोगों के लिए एक स्वादिष्ट आनंद है जो अपने भोजन में मसाले का आनंद लेते हैं।

यदि आप राजस्थान के प्रामाणिक व्यंजनों का स्वाद लेना चाहते हैं, तो चोखी ढाणी इंदौर जाएँ और शानदार स्थानीय व्यंजनों का आनंद लें। आप निराश नहीं होंगे!

दाल बाटी चूरमा, घेवर और कचौरी जैसे स्वादिष्ट व्यंजन कुछ सबसे प्रसिद्ध व्यंजन ह

जिन्हें आप चोखी ढाणी में खा सकते हैं, जो इंदौर के सबसे अच्छे रेस्तरां में से एक है । राजस्थानी व्यंजन अक्सर घी या दही के साथ परोसे जाते हैं, जो गर्मी को संतुलित करने में मदद करता है।

राजस्थानी संस्कृति पारंपरिक पोशाक-राजस्थान जीवंत वस्त्रों का भी घर है। राज्य अपने रंगीन हाथ से बुने हुए कपड़ों के लिए प्रसिद्ध है, जिनका उपयोग विभिन्न प्रकार के पारंपरिक परिधान बनाने के लिए किया जाता है। राजस्थानी महिलाएं और पुरुष अपने जटिल कढ़ाई के काम के लिए प्रसिद्ध हैं और ओढ़नी पहनते हैं, जबकि पुरुष पगारिस या साफा, कुर्ता और धोती पहनते हैं।

राजस्थान की भाषा-राजस्थान में भाषा सम्मान के तमगे की तरह है। यह अपनी जड़ें और आप कहां से आए हैं यह दिखाने का एक तरीका है।

राज्य विभिन्न बोलियों - मारवाड़ी, मालवी, जयपुरी, मेवाती, ढूंढारी, और अन्य का मिश्रण करने वाले एक बड़े बर्तन की तरह है। सभी अलग-अलग शब्दों और वाक्यांशों पर नज़र रखना कठिन हो सकता है, लेकिन यह मज़े का हिस्सा है!

चाहे आप एक आरामदायक छुट्टी या रोमांचक रोमांच के लिए उत्सुक हों, चोखी ढाणी इंदौर सभी प्राथमिकताओं को पूरा करता है। यह सांस्कृतिक गाँव राजस्थान के सार को पुनः निर्मित करता है, जिससे आगंतुकों को पारंपरिक संगीत, नृत्य और व्यंजनों में डूबने का मौका मिलता है। स्वादिष्ट स्थानीय व्यंजनों का आनंद लें, मनमोहक प्रदर्शन देखें और यहां तक कि विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लें - यह सब एक खूबसूरती से तैयार किए गए गांव की सेटिंग में। ये सभी तत्व राजस्थान की अनूठी संस्कृति बनाने के लिए इंदौर के सर्वश्रेष्ठ रिसॉर्ट में एक साथ आते हैं। यदि आप इंदौर में राजस्थानी संस्कृति का अनुभव करना चाहते हैं, तो चोखी ढाणी आपके लिए जगह है। मेहमान पारंपरिक भोजन, संगीत और नृत्य के साथ-साथ आधुनिक सुविधाओं का आनंद ले सकते हैं।

म्हारा चोखा घणा किसान

सुनील कुमार नायक/संस्कार न्यूज

म्हारा चोखा घणा किसान
आखे दिन ?मेहनत करता,
हळ री नोक सूं खेत बांवता,
घणो धान बे उपजाऊतां,
समरपित करता अपणी जान।
म्हारा चोखा घणा किसान।।
पसीने री नदिया बाहवतां,
जणे जा 'र दाणा उपजावतां,
सांगरी काकडीया , मतीरा खांवतां
जणे घणा ही निरोग रेवतां,
छकडा भर-भर लावतां धान।
म्हारा चोखा घणा किसान।।
आखातीज रा सुगन मनावतां,
गांया रे घी रो खिचडो बणावतां,
आंगणे में सात धान मेल 'र पुजा करता,
बे निभावतां अपणी आन।
म्हारा चोखा घणा किसान।।
बे पशु घणा ही राखता,
दुध ,दही , छाछ, राबडी खावतां,
नशे रे नेडा नीं जांवता,
सौ कोसा ही पैदल जांवतां,
आच्छा हा बै जवान।
म्हारा चोखा घणा किसान।।
फोफलिया, काचरिया
फळीया रौ सांग बणावतां,
टिण्डसी रौ साग घणै चावै सूं खांवता,
खेत मे मीठ्ठी बाजरी बांवता,
आखे साल धाप- धाप खांवता,
खेत में नाख देवता आपणा डैरा।
म्हारा चोखा घणा बडैरा।।
खेती रै साथै साथै पशुपालण ही करता,
भांत भांत रा दाणा उपजावतां,
शुद्ध धान बै खांवता,
आवडै-गैवडै रौ घणौ मान करता,
घणौ करता बै सम्मान।
म्हारा चोखा घणा किसान।।

चेटीचंड पर्व का महत्व

पुरे भारत देश में अलग अलग धर्म, समुदाय और जातियों के लोग रहते है हमारे देश को अनेकता में एकता का प्रतीक माना जाता हैं। यह हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात है कि हमारे देश में सभी धर्मों के त्योहारों को बहुत ही धूमधाम और प्रमुखता के साथ मनाया जाता है, फिर चाहे वो दिवाली का त्यौहार हो, ईद हो, क्रिसमस या फिर भगवान झूलेलाल की जयंती होज।सिंधी समुदाय में भगवान् झूलेलाल के जनमोत्स्व का त्यौहार बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस त्यौहार हो चेटीचंड के रूप में पूरे देश में बहुत ही उत्साह और हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

चेटीचंड से जुडी विशेष बाते- चेटीचंड के त्योहार से जुड़ी हुई बहुत सी किवंदतियां हैं मशहूर हैं। परंतु प्रमुख रूप से इस त्यौहार को लेकर यह किवदंती मशहूर है की चूंकि सिंधी समुदाय को एक व्यापारिक वर्ग माना जाता है तो सिंधी समुदाय के लोग हमेशा व्यापर करने के लिए जलमार्ग से आते जाते थे। रास्ते में इन्हे बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। जैसे जब ये लोग समुद्र में यात्रा करते थे तब कभी इन्हे समुद्री तूफान घेर लेता था तो कभी जीव-जंतु, चट्टानें व समुद्री दस्यु गिरोह इनपर हमला कर इनका सारा माल लूट लेते थे। इसलिए जब ये लोग जल मार्ग से यात्रा करने निकलते थे तब इनकी पत्नियां वरुण देवता की आराधना करती थीं और उनसे तरह-तरह की मन्नते मांगती थीं। भगवान झूलेलाल को जल का देवता माना जाता हैं। इसलिए झूलेलाल सिंधी संदाय के आराध्य देव माने जाते हैं। जब पुरुष वर्ग जलमार्ग से कुशलता पूर्वक घर वापस आ जाता था तब चेटीचंड को एक त्यौहार के रूप में मनाया जाता था। झूलेलाल को धन्यवाद देकर उनसे मन्नतें मांगी जाती थी और भंडारा किया जाता था।

चेटीचंड से जुडी विशेष बातें- जब बंटवारे के बाद सिंधी समुदाय के लोग भारत में रहने के लिए आये तो ये सभी लोग तितर-बितर हो गए। उस वक़्त साल 1952 में प्रोफेसर राम पंजवानी ने सिंधी समुदाय के लोगों को इकठ्ठ करने के लिए बहुत सारी कोशिशे की। प्रोफेसर राम पंजवानी उन सभी जगहों पर जाकर सिंधी लोगों को इकठ्ठा करने लगे जहाँ जहाँ वो लोग रहते थे। प्रोफेसर की कोशिशे रंग लायी और एक बार फिर भारत में भगवान झूलेलाल का त्यौहार बहुत ही धूमधाम के साथ से मनाया जाने लगा।

आज के समय में पूरा सिंधी समुदाय प्रोफेसर राम पंजवानी का आभारी है।

मान्यताओं के अनुसार चेटीचंड का त्यौहार-आज के समय में भी जो लोग समुद्र के किनारे रहते हैं वो जल के देवता भगवान झूलेलाल जी की पूजा करते हैं। भगवान् झूलेलाल को अमरलाल व उडेरोलाला भी कहा जाता है। भगवान झूलेलाल जी ने धर्म की रक्षा करने के लिए बहुत सारे साहसिक काम किये हैं जिसकी वजह से आज के समय में इनकी मान्यता इतनी ऊंचाई पर पहुँच पाई है।

चेटीचंड का पर्व सिंधी समाज का विक्रम संवत का पवित्र शुभारंभ दिवस माना जाता है। विक्रम संवत 1007 सन् 951 ई। में आज के ही दिन सिंध प्रांत के नसरपुर नगर में रहने वाले रतनराय के घर माता देवकी के गर्भ से प्रभु खुद एक तेजस्वी बालक उदयचंद्र के रूप में अवतरित हुए थे। भगवन के इस अवतार ने पापियों का नाश करके धर्म की रक्षा की।

आज के समय में चेटीचंड के त्यौहार का महत्व केवल धार्मिक ही नहीं रह गया है बल्कि अब ये त्यौहार सिंधु सभ्यता के प्रतीक बन चूका है।

सिंधी समुदाय के लोग चेटीचंड पर्व को एक- दूसरे के साथ भाईचारे के साथ एक सिंधियत दिवस के रूप में मनाते है।

चेटीचंड पर्व के दिन पूरा सिंधी समुदाय एक जगह एकत्र होकर भगवान् झूलेलाल की जयंती को बहुत ही हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ मनाता है।

अलग अलग वेशभूषाओं में मनाया राजस्थान स्थापना दिवस

रेखा कुमावत/संस्कार न्यूज

अजमेर। पीएमश्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लोहागल अजमेर में राजस्थान दिवस के पूर्व दिवस %नो बैग डे% कार्यक्रम अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रधानाचार्य सोनल गांधी ने बताया कि राजस्थान राज्य की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और विविधता को समझने और सराहने हेतु अधिकांश शिक्षक और विद्यार्थी राजस्थान की पारंपरिक पोशाक पहन कर आए। इस अवसर पर विद्यार्थियों के लिए प्रभारी रीना कुमारी के निर्देशन में राजस्थानी कविता, भाषण, नृत्य एवं राजस्थानी भाषा में कुछ हिंदी फिल्मी संवाद बोलने की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । साथ ही विद्यार्थियों एवं अभिभावको के लिए राजस्थानी वेशभूषा प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया ताकि विद्यार्थियों को राजस्थान की लोक परंपराओं से जुड़ने में मदद मिले तथा वे राजस्थान की परंपराओं का अनुभव कर सके। संचालन सीमा बालोटिया ने किया। सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया। इस अवसर पर उप प्राचार्य सीमा शर्मा, भूपेंद्र सिंह मेड़तिया, भारती चतुर्वेदी, अमीन खान, मीरा चांदनानी, मीना मीणा, गुरमीत कौर, रेखा यादव, रूबी यादव, ओम कंवर, अनीता डगर, मोनिका रावत, कुशाग्र शर्मा, नोरत लखन, हेमलता गुरनानी उपस्थित रहे।

नि:शुल्क कोचिंग बिल्हा द्वारा नवोदय विद्यालय क्राति का आगाज़

बिलासपुर - संकुल कन्या बिल्हा के शैक्षिक समन्वयक केशव वर्मा के मार्गदर्शन व संरक्षण में जनपद प्राथमिक शाला बिल्हा के शिक्षक कलेश्वर साहू व राजेश यादव शासकीय प्राथमिक शाला कोटिया द्वारा बिल्हा क्षेत्र के बच्चों के आर्थिक स्थिति व शिक्षा स्तर को ध्यान में रखते हुए नवोदय विद्यालय परीक्षा की तैयारी कराई जाती है। प्रवेश परीक्षा 2025 हेतु नि:शुल्क कोचिंग कराया गया जिसमें से समीक्षा ध्रुव, शेखर राज कोशले, अवनीश श्रीवाश, अविनाश वर्मा, दिशा साहू का चयन नवोदय विद्यालय कक्षा छठवीं हेतु हुआ है। इन 5 बच्चों का चयन होने से उनके माता - पिता व पूरे बिल्हा में उत्साह देखा जा रहा है। नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा 2025 पूरे देशभर में 18 जनवरी को आयोजित किया गया था। जिसमें देश के लाखों बच्चों ने परीक्षा दी । कलेश्वर साहू व राजेश द्वारा जनपद प्राथमिक शाला बिल्हा में यह नि:शुल्क कोचिंग का संचालन शाला समय के अतिरिक्त शाम 4 बजे से 5=30 बजे तक किया गया था। जिसमें बिल्हा क्षेत्र के बच्चों को नि:शुल्क कोचिंग कराया गया। इस

कोचिंग के संचालन में केशव वर्मा शैक्षणिक समन्वयक कन्या बिल्हा, साधराम मरकाम प्रधान पाठक, शिक्षक पुनीराम साहू, श्वेता केशरी, मोतीलाल सेन, मदन एक्का का सहयोग रहा है। विभिन्न स्कूलों के गरीब बच्चों को नि:शुल्क कोचिंग देने वाले जिले का एकमात्र स्कूल जनपद प्राथमिक शाला बिल्हा संकुल कन्या बिल्हा है। बच्चों के लिए समर्पित इन दोनों शिक्षक का कार्य बहुत ही सराहनीय व अनुकरणीय है। केशव वर्मा ने बताया कि हमारी टीम का उद्देश्य प्रत्येक बच्चों तक शिक्षा विभाग के सभी योजनाओं का लाभ पहुंचाना है। हमारी टीम हश्वक्क2020 को लेकर विभिन्न कार्य कर रही है यह टीम पूरे जिला के प्रेरणादायक बन गई है। । कलेश्वर साहू ने चयनित बच्चों को बधाई देते हुए कहा कि जिसका चयन नहीं हुआ है उनको मायूस नहीं होना हैं हमारे कोचिंग के माध्यम जो कुछ सीखा है वह आपके भविष्य में सहायक होगी। आगे आप लोगों के लिए और भी विभिन्न अवसर है जिसमें हमारा पूर्ण सहयोग रहेगा। राजेश यादव ने कहा सफलता एक दिन का परिणाम नहीं है इसके लिए निरंतरता जरूरी है जिससे हम उद्देश्यों को हासिल कर सकें। नि:शुल्क कोचिंग के इस समर्पित कार्य को जिले के अधिकारियों, शिक्षको, संगठन व जन समुदाय द्वारा बहुत ही सराहना कर रहे हैं।

चेटीचंड पखवाड़े के नवें दिन विद्यालयों व पंचायतों में सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतिभाओं का सम्मान

अजमेर (**संस्कार न्यूज**) पूज्य झूलेलाल जयन्ती समारोह समिति द्वारा चलाये जा रहे चेटीचंड पखवाड़ा महोत्सव के नवें दिन स्वामी सर्वानन्द, हरिसुन्दर व सन्त कंवरराम विद्यालय सहित सिन्धू भवन पंचशील नगर, सामुदायिक केन्द्र वैशाली नगर व पूज्य उदेरोलाल मन्दिर, आशा गंज में सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

स्वामी सर्वानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय-संयोजक रूकमणी वतवाणी ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ सुधार सभा संरक्षक ईश्वर ठाराणी, महासचिव रामस्वरूप विजयवर्गीय पखवाड़ा समिति के कंवलप्रकाश किशनानी, महेन्द्र कुमार तीर्थाणी व लाल नाथाणी ने आराध्यदेव झूलेलाल की मूर्ति पर माल्यार्पण कर किया गया।

समारोह में विद्यालय के नन्हें-नन्हें विद्यार्थियों को आराध्यदेव झूलेलाल, महापुरूषों के वेशभूषा में रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। महासचिव रामस्वरूप विजयवर्गीय ने विचार प्रकट करते हुये कहा कि आज विशेष संयोग बना है कि नवसम्वतंसर व चेटीचण्ड की पूर्व संध्या, राजस्थान की स्थापना के साथ अजयमेरू की भी स्थापना का दिवस है जो हमारे लिये सौभाग्य की बात है और कल से माता रानी के नवरात्रा भी प्रारम्भ हो रहा है, जिससे बच्चों में शिक्षा के साथ संस्कार भी मिल रहे हैं जिसके लिये विद्यालय स्टॉफ व पखवाड़ा समिति बधाई की हकदार है।

महेन्द्र कुमार तीर्थाणी ने विचार प्रकट करते हुये कहा कि इस तरह के धार्मिक आयोजन से विद्यार्थियों को ज्ञान में बढ़ोतरी हो रही है और इनका सम्मान होने पर सदैव स्मरण रहेगा। 31 मार्च को वरूण सागर पर आयोजित होने वाले समारोह में हम सभी की सहभागिता एक एक दीपक घर से लेकर जल व ज्योति की पूजन से होगी। धार्मिक आयोजन के साथ संत महात्माओं का आर्शीवाद भी मिलेगा। प्राचार्य उत्तम कुमार गोयल ने सभी का आभार प्रकट किया। समारोह में विद्यार्थियों ने गणेश वंदना, आराध्यदेव झूलेलाल की जीवनी, सामूहिक नृत्य, राजस्थानी नृत्य, सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किये गये, जिन्हे सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में भारतीय सिन्धू सभा के रमेश वलीरामाणी, रमेश लख्याणी, गोविन्द मनवाणी, लेखराज ठकुर सहित स्टाफगण उपस्थित थे।

हरिसुन्दर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय एकता का संदेश देने वाले झूलेलाल का जन्मोत्सव व नवरात्रा स्थापना धूम धाम से मनाया-सुधार सभा द्वारा संचालित हरीसुन्दर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. मुस्कान थाराणी ने बताया कि चेटीचण्ड की पूर्व संध्या पर विद्यालय प्रांगण में आराध्यदेव झूलेलाल की तस्वीर व मां सरस्वती की मूर्ति पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। मुख्य अतिथि पूज्य झूलेलाल जयन्ती समारोह समिति के अध्यक्ष कंवलप्रकाश किशनानी ने कहा कि झूलेलाल व माता रानी का रूप धरे यह विद्यार्थी साक्षात भगवान का रूप दिखते हैं। चेटीचण्ड व नवसम्वंतसर की सभी को शुभकामना देते हुये पखवाड़े के कार्यक्रमों की जानकारी दी।

विद्यालय की रोली एण्ड ग्रुप ने नृत्य, ऐश्वर्या ने सुहिणा रस्ता पिया सजन, डिम्पल लालवाणी ने झूलेलाल की जीवनी, झूलेलाल पर सिन्धी में नृत्य, भाविका ने उहे हथु मथे करे गीत, भाविका एवं तानिया ने होजमालो गीत प्रस्तुत कर मत्रंमुग्ध कर दिया। कामिनी चांदवानी ने माता का भजन पेश कर देवी की स्तुति की। गोविन्द मनवाणी ने झूलेलाल पर कविता सुनाई। छात्राओं ने चेटीचण्ड की वाधायूं पर नृत्य एवं सिन्धी छेज प्रस्तुत किया। नन्हे-मुन्ने बच्चों ने भगवान झूलेलाल एवं नवदुर्गा का स्वरूप धारण कर सभी को आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन जयकिशन गुरबाणी ने चेटीचंड पर काव्यपाठ करते हुए किया। काजल लौंगाणी एवं वंषिका ने कार्यक्रम की रूपरेखा रखी। इस अवसर पर ईश्वर ठाराणी, दयाल शेवाणी, रामस्वरूप विजयवर्गीय, महेन्द्र कुमार तीर्थाणी, किशोर मंगलाणी, पुरषोत्तम देवनाणी, किशन केवलाणी, गोविन्द छतवाणी, भागू इसराणी, कौषल्या सावनाणी, अर्चना मिश्रा, विकास कश्यप, हरीश सेवाणी, मोनू सर, सुमित्रा खेतावत, पदमा मोहनाणी, कामिनी आचार्य, विद्यालय स्टॉफ के साथ सुधार सभा परिवार, नगर के गणमान्य नागरिक एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

नवयुवक सेवा मण्डल की ओर से पूज्य उदे्रोलाल मन्दिर आशागंज-संयोजक वीरूमल ज्ञानचन्दाणी ने बताया कि नवयुवक सेवा मण्डल की ओर से पूज्य उदे्रोलाल मन्दिर आशागंज में मन्दिर के ओमप्रकाश ठकुर व भगवान रूपाणी के साथ कवंलप्रकाश किशनानी, गिरधर तेजवाणी, लाल नाथाणी द्वारा आराध्य देव झूलेलाल की मूर्ति पर माल्यार्पण व दीप प्रज्जवलन कर किया गया। पूज्य बहिराणा का कार्यक्रम विजू भगत व कलाकारों द्वारा पंझडा व गीत प्रस्तुत किये जिस पर सभी ने सामूहिक छेज् व नृत्य प्रस्तत किया।उपाध्यक्ष अजीत पमनाणी ने बताया कि पखवाडा समिति की ओर से पांच प्रतिभाओं का सम्मान दादा झमटमल टिलवाणी सम्मान गुलाब राय बेलाणी, दादी सुशीला मोटवाणी सम्मान कौशल्या सतवाणी,दादा गोवर्धन महबूबाणी भारती सम्मान पर्थ नरसिंघाणी, भाउ हरिसुन्दर सम्मान लक्ष्य रायसिंघाणी, दीदी सुन्दरी केवलरामाणी हिमांशी मघताणी को श्रीफल, माला व अभिनन्नदन पत्र देकर सम्मोनित किया गया। समारोह में महासचिव दिनेश गुरबक्षाणी ने सभी का स्वागत व लेखराज ठकुर ने आभार प्रकट किया। समारोह में जेठानन्द मंघताणी, जितेन्द्र नरसिंघाणी, जयकिशन लख्याणी, हरकिशन टेकचंदाणी सहित सेवादार उपस्थित थे।

वैशाली सिन्धी सेवा समिति पं. दीनदयाल उद्यान वैशाली नगर हुये प्रतिभाओं का सम्मान-धार्मिक आयोजन में पांच प्रतिभाओं का सम्मान दादा झमटमल टिलवाणी सम्मान भैरूमल शिवनाणी, दादी सुशीला मोटवाणी सम्मान श्रीमती हरी किशनचन्द केवलाणी,दादा गोवर्धन महबूबाणी भारती सम्मान होतचन्द मोरयाणी, भाउ हरिसुन्दर सम्मान हर्षित होतचन्दाणी, दीदी सुन्दरी केवलरामाणी भारती दरवाणी को श्रीफल, माला व अभिनन्नदन पत्र देकर सम्मोनित किया गया।

सिन्धू भवन पंचशील नगर में हुये प्रतिभाओं का सम्मान -पूज्य सिन्धी पंचायत, सिंधु भवन, पंचशील नगर में धार्मिक कार्यक्रम में पांच प्रतिभाओं का सम्मान दादा झमटमल टिलवाणी सम्मान भगवान शहाणी. दादी सुशीला मोटवाणी सम्मान आशा केसवाणी, दादा गोवर्धन महबूबाणी भारती सम्मान अजीत मूलाणी, भाउ हरिसुन्दर सम्मान मोहन चेलाणी, दीदी सुन्दरी केवलरामाणी भक्ति आहूजा को श्रीफल, माला व अभिनन्नदन पत्र देकर सम्मोनित किया गया।

कल रविवार 30 मार्च को पखवाड़े में आयोजित होने वाले कार्यक्रम -प्रात: 6 बजे से पूज्य सिन्धी पंचायत, पंचशील नगर में प्रभात फेरी व झांकिया राजीव सर्किल से सिन्धु भवन, पंचशील नगर द्वारा आयोजन किया जायेगा जिसके संयोजक कोमल गोदवाणी, हेमा बसराणी, कमल मोतियाणी, कमल आसूदाणी रहेंगे।

प्रात: 6 बजे से नवयुवक सेवा मण्डल, आशागंज में प्रभात फेरी व झांकिया, पूज्य उदे्रोलाल मन्दिर, आशा गंज द्वारा आयोजित होगी जिसके संयोजग लेखराज ठाकुर रहेंगे।

सुबह 10 बजे झूलेलाल सेवा मण्डली झूलेलाल मंदिर वैशाली नगर द्वारा हवन, मुण्डन, जणियां व टिप्पणे का विमोचन होगा जिसके संयोजक ईश्वर जेसवाणी रहेंगे।

प्रात: 11 बजे से आदर्श नगर सिन्धी पंचायत प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्श नगर प्रसाद में वितरण किया जायेगा जिसके संयोजक मनोज भम्भाणी व लालचन्द बजाज रहेंगे।

प्रात: 11 बजे से प्रसाद वितरण चन्द्रवरदाई नगर मुख्य चौराहा, खेल मैदान के पास, चन्द्रवरदाई में होगा जिसमें चन्द्रर नावाणी संयोजक रहेंगे।

प्रात: 11 बजे से पूज्य सिन्धी पंचायत, शास्त्री नगर प्रथम शापिंग सेंटर, शास्त्री नगर द्वारा झूलण जी मौज कार्यक्रम व प्रसाद वितरण किया जायेगा जिसके संयोजक प्रकाश दादलाणी रहेंगे। रविवार को निकलने वाले विशाल शोभायात्रा जुलूस का सभी संस्थाओं द्वारा जुलूस मार्ग पर स्वागत किया जाएगा।

इंफोसिस और अस्पायर के सहयोग से 30 बालिकाओं को असिस्टेंट ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण

पूर्वी चम्पारण (**संस्कार न्यूज**) इंफोसिस फाउंडेशन और अस्पायर फॉर हर के सहयोग से अस्पिरेट एजुकेशन ने 30 बालिकाओं को असिस्टेंट ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण दिया।

बिहार पूर्वी चम्पारण, इंफोसिस फाउंडेशन और अस्पायर फॉर हर के सहयोग से अस्पिरेट एजुकेशन संस्थान ने 30 बालिकाओं को असिस्टेंट ब्यूटीशियन प्रशिक्षण सफलतापूर्वक प्रदान किया इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को ब्यूटीशियन और मेकअप कार्य से संबंधित प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भर और रोजगार योग्य बनाना है। प्रशिक्षण पूर्ण होने पर 30 छात्राओं को प्रमाण पत्र वितरित किए गये साथ ही छात्राओं के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर संस्थान के अध्यक्ष छितिज कुमार ने बताया कि हमारा लक्ष्य है कि अधिक से अधिक बालिकाएं कौशल आधारित शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर बने इंफोसिस फाउंडेशन और अस्पायर फॉर हर के सहयोग से यह पहल बालिकाओं को ब्यूटीशियन क्षेत्र में सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत छात्राओं को मैकअप और ब्यूटीशियन, और अन्य आवश्यक विषयो का व्यवहारिक ज्ञान दिया गया। इस अवसर पर प्रशिक्षित छात्राओं और उनके परिजनों ने संस्थान इंफोसिस फाउंडेशन और अस्पायर फॉर हर का आभार व्यक्त किया और इस पहल को उनके करियर के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर बताया।

प्रकाशक, संपादक श्रीमती सरला शर्मा द्वारा 177/10 मातृछाया, सिंधी तोपदड़ा, अजमेर-305001 से प्रकाशित। प्रधान संपादक-विजय कुमार शर्मा Call:9610012000, Whatsapp:7742431199 Mail:ajmermedia@gmail.com